संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : १० ● ०८ मार्च, २०१६ फाल्गुन कृष्ण सप्तमी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

आर्य समाज के सिद्धान्त ही देश को सभी बुराइयों से मुक्त करायेंगे

देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज मंदिर आजमपुर मूलरूप जिला बागपत का उद्घाटन एवं चतुर्वेद पारायण यज्ञ में उपस्थित आर्य नर नारियों के भारी जन समूह को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने कहा कि आज मुझे इस आर्य समाज मंदिर आजमपुर का उद्घाटन करते हुए अपार हर्ष हो रहा है महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की सीापना देश में फैली सभी बुराइयों को नष्ट करके उत्तम समृद्ध राष्ट्र बनाने की भावना से किया था। जब महर्षि का उदय हुआ तब देश पराधीन था जन मानस का अंग्रेज शोषण कर रहे थे तथाकथित ब्राह्मण ढोंग पाखण्ड फेलाकर समाज की एकता को नष्ट कर रहे थे। महर्षि को देश की पराधीनता का मूल कारण इन सभी बुराइयों बुराइयों को पाया अतः समृद्ध संगठित स्वतंत्र भारत बनाने का लक्ष्य बनाकर आर्य समाज की सीापना की। उन्होंने कहा कि वेद ज्ञान का अभाव इन सब बुराइयों की जड़ हैं। वेद ज्ञान ही सम्पूर्ण मानव जाति के उत्थान का केन्द्र है अतः प्रत्येक मनुष्य को बिना किसी जाति या वर्ग भेद के वेद का अध्ययन करना चाहिए। वेद प्रचार बढ़ा ढोंग पाखण्ड ढहने लगा स्वाधीनता आन्दोलन चला देश स्वतंत्र हुआ।

वेद पारायण यज्ञ की महत्ता को बताते हुए प्रधान जी ने कहा कि यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ ही सृष्टि को श्री सम्पन्न करने का मुख्य साधन ... मंत्र में वर्णित जीवन शैली जीने की भावना जागृत होती है।

आर्य समाज के उद्घाटन अवसर पर आयोजित यह चतुर्वेद पारायण ... कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। आर्य समाज के सभी अधिकारियों व कार्यकर्ता बिना किसी राग द्वेष के आर्य समाज के उद्देश्यों को जन जन में पहुँचाने का संकल्प लेकर आज से ही अपने अपने क्षेत्र में जुट जाये ताकि यह क्षेत्र सभी बुराइयों से मुक्त हो कर सम्पूर्ण राष्ट्र का मार्गदर्शक बनने का अधिकार प्राप्त करे।

इस अवसर पर प्रिंसिपल राम पाल तोमर, श्री कृष्ण पाल जी समाज प्रधान तथा श्री नरेन्द्र सिंह कानहड़ आदि सभी सहयोगियों को आन्तरिक बधाई देते हुए इस भावना के साथ वक्तव्य को विराम देता हूँ कि यह आर्य समाज अपने क्षेत्र को उत्तमोत्तम बनाने में समर्थ होगा।

●●●

आर्य कार्यकर्ता आर्य समाज के कार्यों और सिद्धान्तों को जनजन में पहुंचायें।

२८ फरवरी को शामली में आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन बड़े ही उल्लास पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी के वहां पहुंचते ही उनका भव्य स्वागत किया गया। उपस्थित आर्य नर नारियों को सम्बोधित करते हुये उन्होंने कहा कि आर्य समाज ही समाज और राष्ट्र में एकत्व की स्थापना कर सकता है। आज देश ही नहीं सर्वत्र विश्व में अशान्ति का ताण्डव हो रहा है परन्तु उसका समाधान लोगों की समझ में नहीं आ रहा है। विश्व शान्ति का मूलमंत्र आर्य समाज के सिद्धान्तों में ही संलग्न है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की थी। उन्होंने स्थापना के साथी ही घोषणा की थी। सम्पूर्ण विश्व का मानव प्राणिमात्र के कल्याण के लिए ईश्वर ने उत्पन्न किया है। उन्होंने कहा मानव जीवन कर्म करने के लिए उसने उत्पन्न किया है। कर्म और विकर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आदि सृष्टि में ही वेद का ज्ञान दे दिया है वेद ज्ञान ही सबको एक सूत्र में बांधकर सर्वहिताकारी कार्यो का पथ प्रदर्शन करता है।

महाभारत काल तक वेदाधारित जीवन शैली से सभी जीवन जीते थे आगे प्रधान जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पराधीनता भारत में जन्म लिया था देश में तमाम बुराइयां फैली थी उन्होंने पराधीनता के मूल में इन सभी बुराइयों को देखकर आर्य समाज की स्थापना करके बुराइयों से मुक्त सुखी संगठित और समृद्ध राष्ट्र बनहाने की कल्पना की थी। सभा प्रधान के अतिरिक्त अन्य पदाधिकारियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। उपरोक्त आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन के शामली जिले के विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने रामपाल सिंह कसेरवा, लक्ष्मी चन्द, विपुल आर्य थाना भवन, कुलदीप आर्य, कैराना प्रदीप वनत, वेद मुनि, रूपाल सिंह, पुरमाफी विजेन्द्र सिंह फतेहपुर, नरेन्द्र विदुर, टिटौली मा. राजेन्द्र सिंह लॉक, इन्द्रपाल सिंह प्रधान करौदा हाथी मा मांगेराम बावरी, डा. सुभाष जलालाबाद, मा. शिवपाल सिंह विरालसी, मा. रामेश्वर सिंह दापाल शामली, अशोक बहादुर झिनझाना, राजेश मित्तल की गरिमामयी उपस्थिति रही।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

किसी भी आन्दोलन का विद्रूप देश विघातक : राजनेता इसपर चिन्तन करें

विगत दिनों हरियाणा में जाट आरक्षरण के लिए एक आन्दोलन चलाया गया। किसी भी समस्या के निदान के लिए आन्दोलन अस्त्र है परंतु इस आंदोलन में आंदोलन विघालय बन गया। करोड़ो की सम्पत्ति जलाकर राख कर दी गयी। जो सम्पत्ति नष्ट हुई है वह राष्ट्र की सम्पत्ति थी, जन जन की सम्पत्ति थी अराजक तत्व हर स्थान पर अपनी अराजकता का तांडव करने के लिए तैयार रहते हैं। आंदोलन के कर्ता धर्ता राजनेताओं का धर्म है कि वे आंदोलन को पूर्ण नियंत्रित रूप में चलाकर अपनी मांगे पूरी कराने का यत्न करें।

स्वराज्य आन्दोलन अनेक वर्षो तक चला परंतु अराजकता उस पर हावी नहीं हो पायी थी चूंकि आन्दोलन के सूत्रधार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी थे जिन्होंने किसी भी प्रकार की अराजकता के उत्पन्न होने की अवस्था को उत्पन्न ही नहीं होने दिया। सख्ती से उस पर नियंत्रण किया यथावश्यक आंदोलन को शिथिल किया। यह देश के सभी राजनेताओं को भली भांति ज्ञात होना चाहिए।

जाट आरक्षण आंदोलन अमर्यादित हो गया। मेरी दृष्टि में उस आंदोलन के कर्ताधर्ता नेता उस पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर सके जो भी हो गया वह तो हो ही गया परंतु भविष्य में ऐसी विध्वंसक स्थिति न आने पायें इसके लिए सभी राजनीतिक दलों के नेताओं को गंभीर चिन्तन करने की आवश्यकता है।

मैं व्यक्तिगत रूप से किसी भी जातीय आरक्षण की मांग का विरोधी हूँ परंतु यदि वर्ग विशेष चाहता है तो उस मांग की पूर्ति के लिए उस वर्ग के राजनेतागण आन्दोलन का स्वरूप न बिगडने पाये इसके लिए सावधान रहे।

सभी राजनीतिक दलों के नेतागण इस पर गंभीर चिन्तन करें कि उनके दलों का दायित्व देशोन्नति का है फिर ऐसी विकृत अवस्थायें क्यों उत्पन्न हो रही है। चिन्तन करने पर पता लगेगा कि उनमें दलगत स्वार्थपरता की भावना का उदय हो रहा है जिसके कारण वे सम्पूर्ण देश के हित चिन्तन में अवरोधक कार्यो है व विचारों पर अपना विरोध अनिवार्य नहीं मानते जबकि राजनीतिक दलों के राजनेताओं का दायित्व है कि हर पल दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देश को सुगठित समृद्ध बनाने की योजनाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करें ताकि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने पाये।

सम्पादक

आर्य समाज गांगपुर चुनार का वार्षिकोत्सव 17 से

आर्य समाज गंगापुर चुनार मीरजापुर का वार्षिकोत्सव अगमी 16 एवं 18 मार्च, 2016 को बड़े ही धूम धाम के साथ स्थानीय आर्य समाज में मनाया जायेगा जिसमें इलाहाबाद से डा0 श्री अशर्फीलाल शास्त्री प्राचार्य वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू पं0 विमल किशोर आर्य वैदिक प्रवक्ता लखनऊ पधार रहे है भजनोपदेशको में पं0 जुगुल किशोर आर्य हरदोई से गीतादेवी नानपारा बहराइच इसके अतिरिक्त पाणनीय कन्या गुरूकुल वाराणसी की बह्मचारिणियों द्वारा यज्ञ सम्पन्न होगा। आर्य समाज गांगपुर के शिवकेदार सिंह ने उपरोक्त कार्यक्रम मे अधिक से अधिक आर्य नर नारीयों से भाग लेने की अपील की है।

वेदमय जीवन

ऋचं वाचं प्र प्रद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये
चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ।।

यजुर्वेद : अध्याय - ३६, मन्त्र - १

पदार्थ :- मैं (ऋचम्) ऋग्वेदरूप (वाचम्) वाणी को (प्र पद्ये) प्राप्त होऊँ (यजुः) यजुर्वेदरूप (मनः) मन को (प्र पद्ये) प्राप्त होऊँ (साम) सामवेदरूप (प्राणम्) प्राण को (प्र पद्ये) प्राप्त होऊँ (चक्षुः) उत्तम दृष्टि और (श्रोत्रम्) श्रुति को (प्र पद्ये) प्राप्त होऊँ (मयि) मुझमें (वाक् ओजः) वाणी के ओज (सह) सहित (प्राण अपानौ) प्राण-अपान और (ओजः) शरीर का भी बल हो।

ऋग्वेदरूप वाणी

वेद चार हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वैसे तो चारों वेदों में ज्ञान, चारों में कर्म, चारों में उपासना और चारों में विज्ञान है, फिर भी प्रसिद्ध है कि ऋग्वेद में (मुख्यतः) ज्ञान, यजुर्वेद में कर्म, सामवेद में उपासना और अथर्ववेद में विज्ञान है। इसीलिए मन्त्र में कामना की गई है कि मेरी वाणी ऋग्वेदरूप हो अर्थात् सत्य ज्ञान के अनुसार चले। ऐसी वाणी में चार दोषों का अभाव और दो गुणों का भाव होना आवश्यक है। यथा -

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असम्बद्ध-प्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्।। (मनुस्मृति : अध्याय-१२, श्लोक-६)
सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।। (मनुस्मृति : अध्याय-४, श्लोक-१३८)

वाणी में चार दोष होते हैं- असत्य बोलना, कठोर बोलना, निन्दा-चुगली करना और देश-काल-पात्र का विचार किये बिना अनुचित बोल देना। इन चारों दोषों को दूर कर देना चाहिए। वाणी में दो गुण होते हैं - सत्य बोलना एवं प्रिय बोलना। इन दोनों को प्राप्त कर लेना चाहिए। अप्रिय सत्य बोलना अथवा असत्य प्रिय बोलना भी अवांछित है। इस प्रकार तपः पूत वाणी ही ऋग्वेदरूप होती है।

यजुर्वेदरूप मन -

यजुर्वेद यज्ञ का वेद माना जाता है। इससे यजुर्वेदरूप मन का तात्पर्य हुआ ऐसा मन जो प्रतिक्षण यज्ञ करता हो। यह यज्ञ ईशोपासन, वेदाध्ययन हवन, विद्वत्सेवा, पितृसेवा, सन्तान का पालन-पोषण, अतिथि-सेवा, न्यायचरण, समाज सुधार आदि कर्मो के रूप में होता है। ये शान्ति-काल में होने वाले कर्म हैं। किन्तु शान्ति सर्वदा नहीं रहती। संसार में दैवासुर-संग्राम भी चलता रहता है। यह संग्राम प्रत्येक समय, प्रत्येक देश, नगर, परिवार, यहां तक कि प्रत्येक अन्तःकरण में चलता है। सत्य और असत्य, लाभ और हानि, मानव और दानव, न्याय और अन्याय तथा अपने और पराये में सदैव संघर्ष चलता रहता है जो अशान्ति उत्पन्न करता है। यज्ञीय मन वाले लोग अशान्ति काल में वीरतापूर्वक युद्ध करके दुःख एवं अन्याय को हटाते हैं और शान्ति-काल में धीरतापूर्वक यज्ञ करके सुख-समृद्धि बढ़ाते हैं।

सामवेदरूप प्राण

प्राण का कार्य विश्रामरहित होने के साथ-साथ निःस्वार्थ भी है। इन्द्रियाँ जो अनुभव आत्मा के लिए करती हैं, उसमें से अपने लिए भी रस लेती रहती हैं -

भोगस्तं देवेभ्य आगायद् यत्कल्याणं पश्यति तदात्मने।
(बृहदारण्यक उपनिषद्: अध्याय-१, ब्राह्मण-३, श्लोक-४)

जैसे नेत्रों ने रूप का ज्ञान आत्मा को कराया किन्तु स्वयं भी रूप के रस का पान किया। कानों ने शब्द का ज्ञान आत्मा को कराया किन्तु स्वयं भी शब्द के रस का पान किया। जिह्वा ने स्वाद का ज्ञान आत्मा को कराया किन्तु स्वयं भी उसके रस का पान किया। इस प्रकार इन्द्रियाँ पूर्णतया निःस्वार्थ नहीं हैं। किन्तु प्राण अपने लिए कोई रस शेष नहीं रखता। इसका कोई पृथक् रस नहीं है। यह पूर्णतः निःस्वार्थ रहकर आत्मा के लिए चलता रहता है।

प्राण निष्पाप है। इन्द्रियाँ जो कुछ करती हैं, वह अच्छा और बुरा दोनों प्रकार का होता है। जैसे-अच्छा रूप और बुरा रूप, अच्छा स्वाद और बुरा स्वाद, अच्छा शब्द और बुरा शब्द, अच्छी गन्ध और बुरी गन्ध। मन भी अच्छा चिन्तन एवं बुरा चिन्तन, प्रेम एवं घृणा और राग एवं द्वेष करता रहता है।

खल्वेता देवताः पाप्मभिरुपासृजन्।
(बृहदारण्यक उपनिषद्: अध्याय-१ ब्राह्मण-३, श्लोक-६)

इस प्रकार समस्त इन्द्रियाँ एवं मन पाप से बिंधे हुए हैं। किन्तु प्राण पाप से बिंधा हुआ नहीं है। यह कोई पाप नहीं करता, पूर्णतः निष्पाप है। प्राण निर्विकार, सम, एक-रस, बलिष्ठ एवं पवित्र रहे, यह सामवेदरूप होने का अभिप्राय है। इसके लिए सात्विक भोजन, सात्विक चिन्तन एवं सात्विक व्यवहार रखना अपेक्षित है।

बल और ओज

योगी उपासक की कामना है कि मेरे शरीर में बल और मन में ओज हो। वेद में भी कहा गया है -

बलमसि बलं मयि धेहि, ओजो असि ओजो मयि धेहि।
(यजुर्वेदः अध्याय-१६, मन्त्र - ६)

इनकी प्राप्ति संयम, धैर्य, प्राणायाम, ईशोपासन एवं सत्यनिष्ठा से होती है। अतः तदनुसार वर्त्ते और सिद्धि करें।

डॉ.रूपचन्द्र दीपक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के तत्वावधान में महर्षि दयानंद उत्सव सम्पन्न

इन्दौर। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के द्वारा 192, महर्षि दयानंद जन्मोत्सव के अवसर पर श्रीमती सुमित्रा महाजन (लोकसभा अध्यक्ष, एवं सासंद इन्दौर) को महर्षि दयानंद सरस्वती का चित्र एवं महर्षि दयानंद सरस्वती रचित अमरग्रंथ– कालजयी सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। श्रीमती सुमित्रा महाजन ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती का आज समस्त ऋणी है, विशेष कर हमको शिक्षा –यज्ञ–वेद आदि का अधिकार दिलाकर, स्त्री जाति को "मातृ भव" का सम्मान दिलाया। अतः इस ऋण से उऋण होने के लिए हम सभी को वैदिक सिद्धान्तों को मानना चाहिए।

इस अवसर पर आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद म.म., एवं प्रधान, आर्य समाज मंदिर संचार नगर, इन्दौर म.प्र.), श्रीमती स्नेहलता हांडा (प्रधाना आर्यसमाज न्यू पलासिया, इन्दौर), श्री वेदरत्न आर्य(प्रधान, आर्य समाज संयोगिता गंज, इन्दौर), श्री मनोज सोनी(मंत्री समाज संयोगिता गंज इन्दौर), श्री विजय मालवीय (पर्व प्रधान आर्य समाज दयानंद गंज इन्दौर), श्री संजय आर्य (प्रधान आर्य समाज सदर बाजार, इन्दौर), श्री ओमप्रकाश देवड़ा, श्री कुशलव आर्य आदि उपस्थित थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अनुपम उपहार "मानव निर्माण संस्कार"

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अनुपम उपहार है हमारे जीवन निर्माण के संस्कार जिनकी संख्या १६ है इस दिशा में किसी महापुरूष का ध्यान नहीं गया और यदि गया होगा तो उसकी विधि और लाभ नहीं बताये। स्वामी जी ने शास्त्रों के प्रमाण धर्मसूत्रों के प्रमाण देकर आयु का निर्देश और करने की विधि को सुन्दर व्यवस्थित करते हुए उसके लाभ भी वर्णित किए हैं। स्वामी जी का मानना है कि बालक के जन्म से पूर्व ही उसकी माँ धार्मिक विचारों से युक्त होकर ईश्वरभक्ति यज्ञ एवं स्वाध्याय साधना संयम पूर्वक दिनचर्या का पालन करेगी तो आने वाली पीढ़ी भी धार्मिक आज्ञाकारी और परोपकारी विद्वान तथा बलवान बनेगी। ऐसा स्वामी जी अशीर्वाद के माध्यम से समय समय पर प्रत्येक संस्कार के अंत में अपनी भावना प्रकट कर रहे हैं। स्वामी जी की इच्छा प्रत्येक नागरिक को श्रेष्ठ विद्वान और बलवान बनाने की थी उन्होंने बच्चे के जन्म होते ही जातकर्म संस्कार लिखा है इसमें बालक का पिता स्नानादि के पश्चात सोने की सलाई को शहद में भिगोकर बच्चे की जिह्वा पर ओ३म् लिखे और कान में कहे "वेदोऽसि" हे पुत्र तू वेद है यह संस्कार बालक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है आशीर्वाद में परशुभव - हिरण्यास्तृतं भव कहकर पिता बालक को बलवान मूल्यवान बनाना चाहता है बालक अभी बोल नहीं सकता लेकिन सुनकर संस्कार प्राप्त करता है इसी प्रकार नामकरण संस्कार में बालक का पिता नासिका पर अंगुष्ठ एवं अनामिका का स्पर्श करके उसे देखता है और पूछता है कि "कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि कोनामासि" ४ प्रश्न करता है बालक अभी बोलना नहीं जानता लेकिन ये संस्कार भी सुनने के हैं सुनने से बालक के मन पर पवित्रता एवं सुदृढ़ता आयेगी और वह परिमार्जित हो जायेगा। इस संस्कार में जो आशीर्वाद है स्वामी जी प्रत्येक नागरिक को यही बनाना चाहते हैं हे बालक त्वम् आयुष्मान वर्चस्वी तेजस्वी प्रतापी परोपकारी विद्वान विद्यावान धर्मात्मा यशस्वी पुरूषार्थी श्रीमान् बलवान आज्ञाकारी भूयाः बनो।।

इसप्रकार महर्षि जी की हार्दिक भावना प्रत्येक संस्कार के अंत में आशीर्वाद के रूप में देखी जा सकती है जो सदैव संस्कार विधि में आप देख सकते हैं। उन्होंने विस्तार से प्रत्येक संस्कार को हमारे कल्यार्थ लिखा है आप पूर्ण श्रद्धा और मनोयोग से पढ़े हम मात्र यह सोच लेते हैं कि संस्कार करना या कराना हमारे पंडित अथवा पुरोहितों का ही तो काम्र है अतः संस्कार विधि को हम क्यों पढ़ें? इस धारणा को समाप्त कर प्रत्येक आर्य को अनिवार्य रूप से पढ़ना चाहिए तभी हम भावी पीढ़ी का निर्माण परम्परानुसार कर सकेंगे। प्रत्येक पिता प्रत्येक माता अपनी संतान को गुणवान्ना बनाना तो चाहते हैं लेकिन कैसा वातावरण दिया जाये इसे संस्कार विधि ही बतायेगी। आज इसकी महत्ता और इसलिए बढ़ गयी है कि इस विज्ञान युग में व्हाट्स अप जैसी बीमारी प्रत्येक युवक युवतियों को प्रभावित कर रही है लड़का हो या लड़की उसी के वशीभूत हो चुका है।उसमें क्या परोसा जा रहा है? आप स्वयं देख सकते हैं किसी भी ट्रेन में, बस में सुविधापूर्वक देख सकते है कि कान में लीड लगाकर हाथ में मोबाइल पकड़े हुए क्या सुनते हैं उसमें देखे गये चित्र से आप अनुमान लगा सकते हैं आश्चर्य तो तब अधिक होता है कि जब एक ही फोन को एक एक कान से लड़का ओर लड़की साथ साथ सुन रहे होते हैं अब आप स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे बच्चे बलवान ब्रह्मचारी परोपकारी बन सकते हैं? यही हाल रहा तो आने वाले २० वर्षो में युवकों में बीमारियां प्रविष्टि हो जायेंगी और वे युवावस्था में ही वृद्धों जैसे होकर शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होंगे। महर्षि दयानन्द जी का स्वप्न अधूरा ही रह जायेगा अतः प्रत्येक माता पिता को शीघ्र सावधान रहने की आवश्यकता है विचारों की सम्पत्ति सर्वोपरि है वह संस्कारों के माध्यम से प्राप्त होती है अतः संस्कारों का निर्माण जो बाल्यावस्था में हो जाता है वह सारे जीवन हमारी रक्षा करते हैं कवच बनकर सदैव हमारा उपकार करते हैं - "यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारों नान्यथा भवेत्" जैसे मिट्टी के पात्र को कुम्हार बनातेसमय कच्ची मिट्टी में जैसे संस्कार निशान बना देता है पकने के बाद भी वे वैसे ही बने रहते है उसी प्रकार बालक के मन और मस्तिष्क में जैसे संस्कार विचारों के माध्यम से माता पिता गुरूजन देते हैं वही उनकी अमूल्य सम्पदा हो जाती है। महर्षि जी लिखते हैं "मातृमान् पितृमान आचार्यवान पुरूषोवेद सबसे बड़ा उत्तरदायित्व बालक के निर्माण का माता पर ही रहता है बचपन के क्षण माता के सामीप्य में रहकर संस्कार अर्जित होते हैं अतः "मातृदेवोभव" कहकर माता का सम्मान बढ़ाया है। मातायें अपने सम्मान को आज सुरक्षित नहीं कर पा रही है पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव हमें खोखला कर रहा है आज आर्य समाज को इस दिशा में आन्दोलन की तरह एक उत्तम वातावरण खड़ा करने की आवश्यकता है प्रत्येक आर्य अपना उत्तरदायित्व समझकर ऋषि ऋण उतारने के लिए संस्कार विधि पढ़े और उसके अनुसार स्वयं लाभ उठावे फिर उदाहरण बनकर दूसरों को प्रेरणा देते हुए उपकार करे तो मेरे विचार से आज के इस षडयंत्र के विरोध में ही खड़ा होकर युवा पीढ़ी का भविष्य बचाया जा सकता है। इसके लिए प्रत्येक युवा एवं शिक्षाविद को आगे आना होगा। "नान्यपन्था निघते ऽ मनाय" इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है आशा है सभी शिक्षा प्रेमी इस विषय पर गंभीरता से चिन्तन करके आने वाली पीढ़ी का कल्याण करने का संकल्प लेंगे।

पिता भी अपने उत्तरदायित्व को समझे जिनके लिए आप दिन रात पुरूषार्थ करके धन कमा रहे हैं उस धन का सदुपयोग क्या हो पायेगा? "वंशो वैविचारः" वंश परम्परा मात्र संतान पैदा करने से ही नहीं चलती अपितु पिता की परम्परा संस्कार और विचारों की सुरक्षा से ही चलती है अतः वेद ने भी कहा है "अनुव्रतः पितुः पुत्रो" पुत्र पिता के संस्कार और विचारों के अनुव्रती होवें जब पिता ही व्रती नहीं है तो अनुव्रती कैसे होंगे? यह आज प्रत्येक परिवार में चिन्ता का विषय बनता जा रहा है "पितृदेवो भव" को कैसे सार्थक करोगे? अतः प्रत्येक पिता अपने कर्तव्य का पालन करेगा तो निश्चित सुपरिणाम अच्छा आयेगा। भारतीय संस्कृति और सभ्यता की भी रक्षा होगी। आज एक धारणा बन गई है कि महंगे स्कूल/कालेजों में अपने बच्चे को प्रवेश मिल गया तो अब हमारा कार्य समाप्त हो गया मात्र अध्यापक ही सारे संस्कार दे देंगे यह मात्र मिथ्या धारणा है। आपकी भूमिका भी महत्वपूर्ण है आपके पास बालक १८ घंटे रहता है और वहां मात्र ६ घंटे ही रहता है, वातावरण आपको बनाना पड़ेगा तब आचार्यो को संस्कार देने में सुविधा होगी "आचार्य देवोभव" बाद में आता है। तीनों ही मिलकर संतान का निर्माण करते है। महर्षि जी लिखते हैं कि वह संतान सौभाग्यशाली है जिसकी माता धार्मिक है और पिता चरित्रवान है तथा गुरूजन विद्वान है अतः अपने बच्चों को सौभाग्यशाली बनाने के लिए हमें भी सदैव सावधान रहते हुए उनके शुभ संस्कारों की रक्षा करेंगे तभी हमारे स्वप्न साकार हो सकते हैं। आओ हम सब मिलकर अपने भविष्य अपने बालकों की शिक्षा और संस्कारों के लिए सर्वात्मना समर्पण भाव से जागरूक रहकर सदैव पुरूषार्थी बने तभी हमारी फुलवाड़ी की सुरक्षा होगी। तभी सच्चे अर्थो में हम माता पिता और गुरू कहलाने के अधिकारी बन सकेंगे। ऐसी सद्बुद्धि परमात्मा हमें प्रदान करें।

संचालक गुरूकुल पूठ
गढ़ मुक्तेश्वर-हापुड
६८३७४०४१६२

आर्य समाज नौनेर सीतापुर के प्रधान का आकस्मिक निधन

आर्य समाज नौनेर जनपद सीतापुर के वयोवृद्ध यशस्वी प्रधान श्री जितेन्द्र सिंह गौड़ का दिनांक २८ फरवरी २०१६ को ग्राम नौनेर में अकस्मात् निधन हो गया।

स्व. गौड़ जी सेलूमऊ इण्टर कालेज सीतापुर में ४० वर्षो तक प्रधानाचार्य के पद पर सुशोभित रहे। सेवानिवृत्ति के पश्चात वह इसी विद्यालय में प्रबन्धक के पद पर बीस वर्षो तक अनवरत सेवा करते रहे। इस तरह किसी संस्था की ६० वर्षो तक सेवा करने का उनका ऐतिहासिक कार्य सदैव याद किया जाता रहेगा।

आर्य समाज नौनेर के प्रधान चुने जाने के पश्चात वह वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में भी सक्रिय रहे। उनके निधन के समाचार से जनपद सीतापुर की शिक्षा संस्थाओं व आर्य समाजों में शोक की लहर दौड़ गयी।

स्व. जितेन्द्र सिंह गौड का अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से ग्राम नौनेर में किया गया जिसमें जनपद सीतापुर की समस्त आर्य समाजों के सदस्यों व पदाधिकारियों तथा शिक्षा संस्थाओं के लोगो सहित जन मानस ने अश्रुपूरित नेत्रों से अंतिम विदाई दी।

पूर्व सभा प्रधान प्रो. कैलाश नाथ सिंह की पूण्य तिथि मच्छोदरी वाराणसी में ६ मार्च २०१६ को मनायी जायेगी

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ के पूर्व प्रधान प्रो.कैलाश नाथ सिंह पूर्व शिक्षा मंत्री, नेता विरोधी दल एवं सांसद की तृतीय पुण्य तिथि उनके निवास सीन मच्छोदरी वाराणसी में ६ मार्च १६ को प्रातः यज्ञ हवन एवं प्रवचन के बाद श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा के अलावा अन्य पदाधिकारी, अन्तरंग सदस्य एवं आर्य नर-नारी एवं राजनेतागण आमंत्रित किये गये हैं।

डॉ. विशाल सिंह
पुत्र प्रो. कैलाश नाथ सिंह
अन्तरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.

६ मार्च पुण्य तिथि पर विशेष.....

अमर शहीद पं० लेखराम

पं0 लेखराज का जन्म 8 चैत्र संम्वत 1915 वि0 शुक्रवार के दिन अविभाजित पंजाब के जेहलम जिले के ग्राम सैयदपुर में मेहता तारासिंह के गृह में हुआ था। अपने पिता की ज्येष्ठ सन्तान थे। इनके पितामाह श्री नारायणसिंह सैयदपुर के हाकिम सरदार कान्हासिंह गिल मजीठिया के यहाँ घुड़सवार थे मात्र 6 वर्ष की आयु मे इन्हें फारसी पढ़ने के लिए मदरसे भेजा गया। आप मेधावी थे। फारसी के कठिनतम पाठों को भी कभी दुबारा नहीं पूछा एक बार में ही कंठस्थ कर लेते थे। मिडिल की परीक्षा में जब इतिहास का पर्चा आया तो उत्तर न देकर प्रश्नों का खण्डन शुरू कर दिया। नतीजा जहाँ अन्य विषयों में प्रथम श्रेणी के अंक आए इतिहास में फेल हो गए। संयोंग की बात थी कि इसी इतिहास के अनुत्तीर्ण छात्र को पेशाबर जिले के हाकिमों ने पांच वर्ष बाद जिले के इतिहास के लेखक का कार्य सौंपा। 21 दिसम्बर सन् 1857 को लेखराम को उनके चाचा ने मात्र 17 वर्ष की आयु में पेशाबर पुलिस में भर्ती करा दिया। उन्नति करते करते सार्जेन्ट के पद पर पहुँच गए। एक सिक्ख सिपाही के सत्संग से उन्हें परमात्मा की उपासना का अभ्यास हो गया। 21 वर्ष की आयु में इनकी माता ने विवाह की तैयारी की परन्तु वैराग्य की लहर में इन्होंने विवाह से निषेध कर दिया। गीता पर किसी का भाष्य पढ़ते हुए उन्हें मुन्शी कन्हैया लाल अलखधारी के ग्रन्थों को देखने की उत्कण्ठा हुई। तत्काल ग्रन्थ मंगा लिया उन ग्रंन्थों के पढ़ने से इन्हें ऋषि दयान्द के नाम और काम का पता चला। समचार पत्रों में उन दिनों ऋषि दयान्द की धूम मची हुई थी। लेखराम जो पूरे अद्धेतवादी बन चुके थे,को तिलांजलि देकर संवत 1937 के अंतिम भाग में पेशाबर में माई रन्जीदेवी की धर्मशाला में जहाँ वे रहते थे आर्य समाज की स्थापना कर दी। लेखराम अन्य मतों की तो युक्तिपूर्वक आलोचना करते थे परन्तु नवीन वेदान्ती मित्रों से बातचीत मे कभी कभी निरूत्तर हो जाया करते थे अतः संशय मिटाने और ऋषि दयानन्द का आर्शीवाद लेने के लिए 5 मई सन् 1880 को एक मास का अवकाश लेकर 11 मई को ऋषि के दर्शनार्थ चल दिए 17 मई को सेठ फतहमल की वाटिका मे पहुँचकर ऋषि के दर्शन किए ऋषि से वार्तालाप के अनन्तर लेखराम ने जो प्रश्न पूछे और ऋषि ने जो उनके सटीक उत्तर दिए उससे उनका विश्वास वैदिक धर्म पर चट्टान की भांति दृढ़ हो गया। अजमेर से वापस आकर धर्म प्रचार में लग गए और आर्य समाज पेशाबर की ओर से उर्दू का मासिक पत्र धर्मोपदेश निकालना प्रारम्भ कर दिया एक बार एक मुसलमान अधिकारी इनसे शास्त्रर्थ में उलझ गया जब लेखराम के प्रश्नों का उत्तर न दे सका तो उसने खीझकर इनका सार्जेन्ट का पद निरस्त पर दिया। परन्तु इन्होंने उसकी चिन्ता न की जून सन् 1884 ई0 में सार्जेन्ट लेखराम को पेशाबर से थाना सुआबी स्थानान्तरित कर दिया गया। लेखराम 24 सितम्बर 1884 ई0 को त्यागपत्र देकर मनुष्यों के दासत्व से मुक्त हो गए और अब लेखराम पण्डित लेखराम बल गए। वैदिक धर्म के अनंत सेवक हो गए। संवत 1940 में ऋषि की मृत्यु हुई। इस मृत्यु ने इन्हें अधीर कर दिया। सारे संसार को वैदिक धर्म के झण्डे के नीचे लाने का अपनी ही कर्तव्य समझ लेखराम धर्मवीर का पद प्राप्त करने की ओर अग्रसर हुए। आर्य जाति का कोई व्यक्ति इसाई मुसलमान हो तो उसे बचाने का आर्य समाज पर विपक्षी के आक्षेप का उत्तर देने का काम इनका था। जम्मू के ठाकुर दास नामी हिंदू को यह तीन चार बार छुट्टी लेकर गए और उसे समझाकर मुसलमान होने से बचाया। सन् 1886 के आरम्भ में लेखराम की योग्यता की धूम मच गई। सन् 1887 में पण्डित जी को "आर्य गजट फिरोजपुर का सम्पादक बना दिया गया। ऋषि की मृत्यु को साढ़े चार वर्ष व्यतीत हो चुके थे। जनता उनके जीवन चरित्र की मांग कर रही थी। पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने 1 जुलाई 1888 के अधिवेशन में निश्चय किया कि ऋषि के जीवन का वृतका अन्वेषण करने के लिए पंडित लेखराज को नियुक्त किया जाए। नवम्बर 1888 में आर्य गजट के सम्पादक को पद त्याग कर लेखराज "आर्य मुशाफिर" बने। ऋषि जीवन का अन्वेषण उन्होंने लाहौर से प्रारम्भ किया। धर्म प्रचार भी साथ होता रहा। लाहौर से जालन्धर मथुरा होते हुए अजमेर पहुँचे। यहाँ से मिर्जापुर काशी होकर दानापुर 17 जनवरी 1891 को पहुँचे। यहाँ आर्य समाज के नाम तार आया कि पण्डित जी जीवित हैं या नहीं?किसी शत्रु ने पण्डितजी घर पर उनकी मृत्यु की सूचना भेज दी थी। तार का जबाव दे दिया गया यहाँ लेखराम जी से खडगविलाश प्रेम से "कवि वचनसुधा" की फाइल लेकर ऋषि का कुछ जीवन वृत्त नोट किया। यहाँ तत्कालीन मंत्री डा0 मुंशीलाल शाह ने जो पत्र स्वामी श्रद्धानन्द को लिखा या उससे ज्ञात होता है कि पं0 लेखराम का विचार सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू अनुवाद करने का था। वे स्वतंत्र रूप से अरब मिश्र अफगानिस्तानादि देशों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहते थे। यहाँ से कलकत्ता होकर कुम्भ पर हरिद्वार पहुँचे। हरिद्वार से लाहौर होकर बैसाख 1948 में सक्खर से हैदराबाद (सिन्ध) पहुँच जहाँ पर एक रईस परिवार को मुसलमान होने से बचाया इन्हीं दिनों उन्होंने किश्चियन मत दर्पण "तथा तारीख ए दुनिया" पुस्तक की रचना की। सन् 1892 के अक्टूबर नवम्बर के महीने उन्होंने ऋषि दयानन्द की जन्म भूमि की खोज में बिताए। वैसाख संवत 1950 में पंडित लेखराम 35 वर्ष के हो चुके थे उसी वर्ष ज्येष्ठ मास में वे घर गए और भरी पर्वतान्तर्गत भन्न ग्रामवासिनी कुमारी लक्ष्मीदेवी के साथ उनका विवाह हुआ। पण्डितजी ने अपने इस विवाह के पश्चात उपनी पत्नी को भी पढ़ाना प्रारंभ कर दिया। इन्ही दिनों अमेरिका के शिकागों नगर की प्रदर्शिनी की तैयारियां हो रही थी आर्य समाज की ओर से विशेष प्रतिनिधि भेजने पर विचार हो रहा था। लेखराज ने एक अपील छपवाकर मार्गव्यय और एक अंग्रेजी के सुयोग्य विद्वान की सेवा मांगी। यद्यपि कोई तैयार न हुआ परन्तु इससे उनका धर्म के प्रति उत्कट प्रेम सिद्ध होता है। यदि वे अँग्रेजी जानते होते तो अवश्य अमेरिका जाते। पंडितजी सन्ध्या वन्दन के बडे पक्के थें। एक बार महात्मा के साथ शिक्रय में लुधियाना से जगरांव जा रहे थे मार्ग पानी लेकर शौच गए। लौटने पर पता लगा कि हाथ पैर धोने और कुल्ला करने के लिए पानी नहीं है सन्ध्या का समय हो चुका था। पंडितजी सन्ध्या करने बैठ गए। जब सन्ध्या समाप्त कर चुके तब एक व्यक्ति ने दिल्लगी में पूछा पण्डितजी क्या पेशावरी सन्धया कर चुके। पण्डितजी ने गम्भीर स्वर में कहा ! तुम पोप हो जो बिना पानी मिले ब्रह्मयज्ञ नहीं कर सकते। भोले भाई स्नान कार्य है हुआ परन्तु सन्धया कर्म है और उसका न करना पाप हैं। पण्डित जी व्यायाम भी नित्य करते थे। पण्डित पण्डितजी के घर में 18 मई 1895 को पुत्र उत्पन्न हुआ। बच्चे को नामकरण संस्कार किया और 22 मई 1895 को पुनः धर्म प्रचार हेतु घर से चल दिए। जब 26 अगस्त को जालन्धर लौटे तो पुत्र बीमार मिला। 28 अगस्त को पुत्र की मृत्यु हो गई परन्तु पण्डितजी के चेहरे पर विषाद की रेखा न आने पाई। एक इन्हें पता लगा कि पटियाला रियासत में एक व्यक्ति आर्य धर्म छोड़ रहा है। आप ट्रेन पर सवार होकर चल दिए जब गाड़ी लुधियाना से आगे चली एक व्यक्ति ने पूछा आप कहाँ जाऐंगे। उन्होंने कहा चाबा पायल उसने बताया वहाँ तो गाड़ी ठहरती ही नहीं' है। जब गाड़ी चाबा पायल रेलवे स्टेशन पर पहुँची और न रूकी तब आपने अपना बिस्तर बाहर फेंका और गाड़ी से कूद गए। कपड़े फटे और कुछ चोटें भी आई। वहाँ से चलकर "पायल" पहुँचें और आर्य समाज के मंत्री को साथ लेकर एस व्यक्ति के पास पहुँचे। पण्डितजी ने उस ....से कहा कि मैंने सुना है कि आप हिन्दू धर्म त्याग कर किसी अन्य धर्म में जा रहे हैं। कृपाकर बताइए कि इस धर्म में क्या दोष है तथा उस मत में क्या विशेषता है इस व्यक्ति ने कहा पहले आप यह बताऐं कि आपकी यह दशा कैसे हुई कपड़े फटे हैं। शरीर पर खरोंच के निशान है? पण्डितजी ने कहा मैं आपके लिए आया था गाड़ी स्टेशन पर नहीं रूकी अतः कदूकर उतरा हूँ उसने उत्तर दिया पण्डितजी जिस मत में आप जैसे जान पर खेलने वाले पुरूष हों मैं उस धर्म को कभी नहीं छोडूँगा। पण्डित लेखराम जी मार्च 1896 में अजमेर आर्य समाज के उत्सव में गए नगर कीर्तन में उनके व्याख्यान और बातचीत से कुछ मुसलमान भड़क उठें। ख्वाजा चिश्ती की दरगाह पास थी। आर्य भाई डर कर भाग गए लेखराम अकेले रह गए। उन्होंने सुना था कि विधर्मी की धर्म स्थल से 30 कदम दूरी पर प्रत्येक आर्य प्रचारक को अपने मत के समर्थन का अधिकार है। आप दरगाह के द्वार पहुँचे और उच्च स्वर से कदम गिनना शुरू कर दिया। मुसलमान इनके कृत्य को आश्चर्यचकित होकर देख रहें थे। तीसवें कदम पर पहुँच कर लेखराम ने धर्म प्रचार शुरू कर दिया। कब्रपरस्ती और मर्दुमपरस्ती का जबर्दस्त खण्डन किया। जब पीछे से कुछ आर्य समाजी चुपके से लेखराम की दशा देखने गए तो वे आश्चर्यचकित हो गए। सहस्त्रों मुस्लिम जनता की बड़ी संख्या उनका भाषण

शेष पृष्ठ.....६

टिप्पणी–वर्तमान प्रचलित देवयज्ञ प्रक्रिया पर लेखक ने कुछ अपने भिन्न विचार दिये हैं। विद्वजन इसपर गहन विवेचन करके अपने विचार हमें भेजें जिन्हें हम पाठकों के समक्ष रखेंगे ताकि यज्ञ सही रूप में हो सके–सम्पादक

यज्ञ और अग्नि

–वेद प्रकाश गुप्ता, लखनऊ

यज्ञ करने के लिये अग्नि अथवा उश्मा के अन्य उपयुक्त साधन स्त्रोत अतिआवष्यक, अपरिहार्य है। हम देखें कि अग्नि कितने तरह की होती है और उनके प्रभाव यज्ञ पर भी क्या क्या होते हैं जिससे यज्ञ सार्वदेषिक, सुगम एंव लाभदायक हो सके।

अग्नि के प्रकार :– हम सामान्यतः दो ही तरह की अग्नि देखते हैं, जिसका उपयोग यज्ञ में किया जा सकता है। पहली "लौयुक्त अग्नि" जिसे ही यज्ञ की प्रचलित प्रक्रिया में उपयोग किया जाता है, जिसमें कई रगं के लौ हवा में उठते हैं। इसी अग्नि में यज्ञ के समिधा अर्थात लकड़ी, देषी घी, हव्य सभी पदार्थों को, लौ के साथ जलाई जाती है। ऐसे ही अग्नि में लाषों को जलाकर नश्ट, खत्म किया जाता है। जब किसी पदार्थ को नश्ट करना होता है तब उसे "लौयुक्त अग्नि" अग्नि में जला देते हैं। उदाहरण में जब गोपनीय फाइल, कागज, कूड़ा, करकट को खत्म करने के लिये, लौ के साथ जलाते हैं। दूसरी अग्नि "लौरहित अग्नि" होती है जो बगैर लौ के साथ जलती है। जैसे कोयला, कंडा की अग्नि, जिसमें लौ बिलकुल हवा में नही उठती है, परतुं इसके साथ सुलगना यानी धुवाँ भी हो सकता है, जैसे सुलगती हुई कंडा, सुलगती हुई लकड़ी, धूप बत्ती, अगर बत्ती आदि जिसे हम जीवन में प्रायः देखते हैं। जब किसी पदार्थ के रसायनों को हवा में वायुरुप में फैलाना होता है, तब उसे "लौरहित अग्नि" में जलाते, सुलगाते हैं। उदाहरण में मच्छर क्वायल, धूपबत्ती, अगरबत्ती, धूनी चिकित्सा आदि। प्रथम प्रकार की अग्नि हेतु सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–11 के पृश्ठ 267 (भिन्न संस्करणों में भिन्न पृश्ठ नबंर हो सकते हैं) पर स्वामी दयानंद जी ने ज्वालामुखी संबधी एक प्रश्न के उत्तर में लिखा है कि "जैसे बघार के घी के चमचे में ज्वाला आ जाती, अलग करने से वा फूँक मारने से बुझ जाती, थोड़ा सा घी को खा जाती, शेष छोड़ जाती, उसी के समान वहां भी है। जैसे चूल्हे की ज्वाला में जो डाला जाय, सब भस्म होता, जंगल वा घर में लग जाने से सबको खा जाती है"। यह समस्त अग्नियाँ अर्थात बघार, चूल्हे, जंगल, घरों, प्रचलित यज्ञ आदि की अग्नि "लौयुक्त" ही होती है। ऐसे ही लौयुक्त अग्नि में षव मुर्दो को जला कर समाप्त किया जाता है। इसी प्रकार दूसरे प्रकार की अग्नि हेतु, सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–10 पृश्ठ 216 (भिन्न संस्करणों में भिन्न पृश्ठ नबंर हो सकते हैं) के अंत में स्वामी दयानंद जी ने, लिखा है कि "यह निष्चय है कि जैसे अग्नि में इंधन और घी डालने से बढ़ता जाता है, वैसे ही कामों के उपयोग से काम षांत कभी नही होता, किंतु बढ़ता ही जाता है।" इन लिखे हुए दोनो बातों से हमें विदित होता है कि स्वामी दयानंद जी को दोनो तरह की अग्नियों का संज्ञान था कि दोनो तरह की अग्नियाँ अलग अलग गुण, व्यवहार की होती हैं और उनके प्रभाव भी अलग अलग होते हैं। पृश्ठ 216 में लिखी अग्नि, पृश्ठ 267 में लिखी अग्नि से पूर्णतः भिन्न होती है जो "लौरहित अग्नि" होती है जैसे कोयले, कंडे की "लौरहित अग्नि" जिसमें घी और इधंन डालने से बढ़ती जाती है अर्थात उसके आयतन यानी जगह घेरने की मात्रा बढ़ती ही जाती है, जैसे जैसे घी इधंन की तापमान यानी गर्मी, अग्नि के संसर्ग के कारण बढ़ती जाती है और षीघ्र ही यह घी इंधन बढ़ते बढ़ते 1700 गुना तक बढ़ कर वाश्प के रुप में यानी धुवाँ बन कर हवा में भी बढ़ती रहती है यानी दूर दूर तक हवा में फैलती है और हजारों लोगों को मूल सुगधों, मूल गुणों सहित नसिका से ग्रहण होने लगती है। पृश्ठ 267 में लिखी, प्रथम प्रकार की अग्नि यानी चूल्हे की ज्वाला जैसी "लौयुक्त अग्नि" मे घी इंधन आदि जो भी डाला जाये, सब खा ली यानी नश्ट कर दी जाती है अतः स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखे गये यज्ञ के लक्ष्य, ध्येय इस चूल्हे जैसी लौयुक्त अग्नि से प्राप्त नही ही हो सकती है। वह अग्नि "लौरहित अग्नि" ही हो सकती है जिसमे घी हव्य आदि जो भी डाला जाये, वह सब बढ़ता जाये, बढ़ता जाये और बढ़ते बढते 1700 गुना बढ़ कर, गैस यानी वाश्प यानी वायुरुप में हो जाये और हवा में फैलने लगे, से ही वांछित लक्ष्य, ध्येय की प्राप्त होती है। अतः इससे सिद्ध होता है कि "लौयुक्ति अग्नि" द्वारा यज्ञ अर्थात प्रचलित प्रक्रिया के यज्ञ में आहुति की गई घृत एवं हव्य को भष्म कर खा ली जाती है, जिससे नसिका से ग्रहण करने योग्य सुगंधित रसायने हवा में नही ही फैलेती हैं एंव यज्ञ के किसी भी लक्ष्य की पूर्ति नही होती है। यज्ञ भी सार्वदेषिक कर्म है जिसके लिये घी सभी देषों में उपलब्ध है परतुं हव्य के सामग्री देष, काल, मौसम, वातावरण एंव उपलब्धता के अनुसार अलग अलग लिया जा सकता है। यज्ञ के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये उश्मा के अन्य विकल्पों जैसे बिजली के हीटर, इंडक्सन चूल्हा, गैस आदि का उपयोग निर्धारित कर्मकांडों के साथ किया जा सकता है।

यज्ञ के लक्ष्यः– सबसे पहले हम जानें कि यज्ञ के लक्ष्य, ध्येय क्या क्या है?सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3 में स्वामी दयानंद जी ने यज्ञ संबधित प्रश्न "चदंनादि घिस के किसी को लगावे, वा घृतादि खाने को देवे तों बड़ा उपकार हो। अग्नि में डाल के व्यर्थ नश्ट करना, बुद्धिमानों का काम नहीं।" के उत्तर में लिखा है, "उत्तर – जो तुम पदार्थ विद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नही होता। देखो, जहाँ होम होता है वहां से दूर देश मे स्थिति पुरुषों को नसिका से सुगधं का ग्रहण होता है वैसे दुर्गधं का भी। इतने से समझ लो कि अग्नि में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म हो के फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गधं की निवृति करता है।" यह बात विज्ञान एंव प्रत्यक्ष प्रमाण के अनुसार भी सर्वथा उचित है। इससे विदित होता है कि यज्ञ का मुख्य तीन लक्ष्य, ध्येय है। प्रथम लक्ष्य – देशी घी एवं आहुतियों के रसायनों को सूक्ष्म करके हवा में फैलाने का है, द्वितीय लक्ष्य – जो सुगंधित हो एंव् तृतीय लक्ष्य – नसिका से ग्रहण करने योग्य हो। ऐसा ही लक्ष्य यजुर्वेद मंत्र 3/4 "उप त्वाग्ने – – –समिधो मम्।" के भावार्थ में स्वामी दयानदं जी ने लिखा है कि "मनुश्य लोग जब इस अग्नि में काश्ठ घी आदि पदार्थों की आहुति छोड़ते हैं तब वह उनको अतिसूक्ष्म करके वायु के देषातंर को प्राप्त कराके दुर्गधांदि दोशों के निवारण से सब प्राणियों को सुगंध देता है। ऐसा सब मनुश्यों को जानना चाहियें।" इससे भी यज्ञ के ऊपर लिखे तीनों लक्ष्यों की पुश्टि होती है। हमें यह चितंन, मनन, वेद षास्त्रों के अध्ययन, प्रत्यक्ष प्रमाण एंव वैज्ञानिक तथ्यों, षोधों से यह निर्णय करना है कि यज्ञ के यह लक्ष्य, कैसे सुगमता, मितव्ययिता से प्राप्त किया जा सकता है, जो "लौरहित यज्ञ" ही पाया जायेगा। इस लेखनी का मुख्य उद्देष्य मात्र इसी सत्य को प्रतिपादित करना है।

पदार्थों के रसायनों को कैसे सूक्ष्म करके हवा में फैलाया जा सकता हैः– अब हम प्रत्यक्ष प्रमाण के आधार पर जानें कि किसी पदार्थ को सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म कैसे कर सकते हैं क्योंकि यज्ञ का मुख्य ध्येय घी एंव हव्य के मूल रसायनों को सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म करके हवा में फैलाना है जिससे वह अधिसंख्य लोगों को नसिका से ग्रहण हो सके। हम घर में मसालों को सूक्ष्म करने के लिए, पीस कर बारीक यानी सूक्ष्म कर लेते है। गेहूं को पीस कर सूक्ष्म यानी आंटा या अतिसूक्ष्म कर मैदा बना लेते हैं। कणों के सूक्ष्म अतिसूक्ष्म होने पर सभी पदार्थ ज्यादा जगह घेरते हैं अर्थात उनका आयतन बढ़ जाता है। कणें जितने ही सूक्ष्म होते जाते हैं वैसे ही आयतन बढ़ते जाते हैं। जब हम किसी डिब्बे में गेहूँ पिसवाने ले जाते हैं तब डिब्बा करीब एक चौथाई खाली रखते हैं क्योंकि पिसवाने के बाद उसका आयतन यानी जगह घेरने की क्षमता काफी बढ़ जाता है जिससे डिब्ब पूरा भर जाता है बल्कि कूट कूट कर दबा दबा कर भरा जाता है। इसे चलते हुए हवा में रखने पर या पंखा के हवा से भी हवा में उड़ा कर फैलाया जा सकता है। मिट्टी, पत्थर, खर पतवार आदि के छोटे छोटे, सूक्ष्म कण हवा में उड़ते रहते हैं जिसे हम प्रायः सूर्य के प्रकाष में देखते हैं। ऐसे ही प्रायः अधिकाष पदार्थ गर्म करते रहने पर बढ़ते जाते हैं अर्थात उनके कण जिन्हे हम विज्ञान में अणु कहते हैं दूर होते जाते हैं जिससे दूर होते होते, ठोस अवस्था से तरल अवस्था और फिर वाश्प यानी भाप के अवस्था में परिवर्तित होने लगता है। प्रायः सभी पदार्थ वाश्प अवस्था में होते ही हवा में फैलने लगते हैं। इसीलिये जल यानी पानी को सूक्ष्म कर हवा में फैलाने के लिए गर्म कर उबालते रहने पर भाप बन कर हवा में फैलने लगता है। इसी प्रकार घृत को सूक्ष्म कर हवा में फैलाने के लिए गर्म कर उबालते रहने पर भाप यानी वाष्प बन हवा में फैल जाता है और अंत में कुछ भी षेश नही बचेगा। यदि हम कुछ बूदें पानी अथवा घी की "लौरहित अग्नि" अर्थात कोयले या कंडे की अग्नि अथवा गर्म तवे पर डालते है तब वह तुरतं गर्म होकर भाप बनकर हवा में फैल जाता है। यदि हम घी के इन वाश्पों को इकट्ठा कर ठंडा कर लें तो हमें घी तरल रुप में पुनः वापस मिल जायेगा जिसके समस्त गुण मूल घी जैसा ही होगा। यदि ऐसे ही अग्नि पर केषर या कपूर के कुछ छोटे छोटे टुकड़े डालते तब वह भी गर्म होकर भाप यानी वाश्प बन कर हवा में फैल जाता है और उनके मूल सुगंधित रसायनें हमें नसिका से ग्रहण होने लगते हैं। उपरोक्तानुसार यज्ञ का यही लक्ष्य, ध्येय है। यज्ञ हव्य को यदि तवा या कढाई में गर्म करते रहने यानी भूनने पर इसके रसायन गर्म होकर भाप यानी वाष्प बनकर हवा में फैलकर अपनी सुगंध बिखेरेंगे और लोगों को नासिका से ग्रहण होंगे। ऐसे ही हमें यज्ञ के लिए वह अग्नि चाहिए जो घृत एवं हव्य के रसायनों को ऊष्मा देकर इतना गर्म कर दे, कि वह भाप, वाश्प बन कर सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म होकर हवा में सुगंधियों के साथ फैल सके, जो अधिसंख्य लोगों को नासिका से ग्रहण होकर सुगधं, औशधिये, पुश्टिदायक आदि लाभ दे सके, जो केवल कोयले या कंडे की अग्नि से ही हो सकती हैं।

यज्ञ प्रक्रिया में त्रुटि एंव सुधार की संभावना :– अब हमें यह सोचना, ध्यान देना है कि "लौयुक्त यज्ञ" के प्रचलित प्रक्रिया में त्रुटि, गलती हो सकती है या नही?क्या त्रुटि पायी जाने पर सुधार किया जा सकता है या नही? अन्य धर्मों की तरह आर्य समाज में अंधविश्वास, रुढ़िवादिता और हठवादिता नही है। सही सत्य सर्वलाभदायक पुण्यमय कर्म करते रहने के लिये आर्य समाज में निम्नानुसार 3 आदेष निर्देष हैं।

(1) आर्य समाज के 10 नियमों में से, नियम 4 "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए," तथा नियम 5 "सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य, लाभकारक और हानिकारक होने का विचार करके करना चाहिए"।

(2) स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक के भूमिका के दूसरे पृष्ठ में लिखा है कि "हाँ जो वह मनुश्यमात्र का हितैशी होकर जनावेगा? उसको सत्य सत्य समझने पर उसका मत सग्रंहीत होगा।" इससे स्पष्ट है कि सत्यार्थ प्रकाश एंव अन्य पुस्तकों में जो जो त्रुटियां संज्ञान में आयेगीं, उन सबका सुधार किया जायेगा।

(3) सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3 के 27वें पृष्ठ (भिन्न संस्करणों में भिन्न पृष्ठ नबंर हो सकते हैं) में लिखा है "जैसे ऋग, यजुः, साम और अथर्व चारों वेद ही ईश्वरकृत हैं। वैसे ऐतरेय, षतपथ, – – – ये चार वेदों के उपवेद इत्यादि सब ऋषि–मुनि के किये ग्रथं हैं। इनमें जो– जो वेद विरुद्ध प्रतीत हों, उस–उस को छोड़ देना।" अतः इन तीनों संदर्भो आदेष निर्देष से गलती, भूल चूक, हमसे आपसे किसी भी ऋषि मुनि और स्वामी दयानंद जी से भी अनजाने में हो सकती है और किसी भी पुस्तक में त्रुटि हो सकती है, जिसका ज्ञान में आते ही सुधार किया जाना अनुमन्य एंव अतिआवष्यक है। यज्ञ करने की प्रक्रिया भी ऋशि मुनियों द्वारा ही लिखी गयी है, अतः इसमें भी त्रुटि हो सकती है और त्रुटि निवारण कर, इसके पालन करने के लिये प्रत्येक मनुश्य स्वयं स्वतत्रं, समर्थ एंव सक्षम हैं। इससे यह भी विदित होता है कि सुधार, सत्य कर्म, कार्य को स्वीकार करने एंव पालन करने के लिए किसी समिति, सभा आदि के स्वीकृती, अनुमोदन की आवष्यकता नही है। यज्ञ के लाभदायक विधि, प्रक्रिया का निर्णय वेदों और शास्त्रों के आधार पर, स्वयं अवलोकन, निरीक्षण परीक्षणों के प्रत्यक्ष प्रमाणों के आधार पर एंव विज्ञान के ज्ञान के आधार पर किया जा सकता है जिनके विवरण क्रमवार निम्न हैं।

क्रमशः अगले अंक में.....

बारूद के एक ढ़ेर पर बैठी है यह दुनिया

पं० उम्मेदसिंह विशारद
मो०- ६४११५१२०१६

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी, महान समाज सेवी व दूरंदर्शी थे इसीलिए उन्होंने स्वयं की मुक्ति का मार्ग न अपनाकर मानव समाज की सुख शान्ति हेतु समाज को प्राचीन, वैदिक, संस्कृति संस्कारों से जोड़ने का अथक प्रयास किया था।

वे ऐसा समाज देखना चाहते थे जिसमें न साम्राज्यवाद हो, न पूँजीवाद हो, न धर्म के झगड़े हो न जाति के, धन की महत्ता हो न शास्त्र बल की। सारी दुनिया एक राष्ट्र हो मनुष्य मात्र की एक जाति हो। वर्ण व्यवस्था हर नर नारी का अधिकार हो सम्मान हो। एक ईश्वर की पूजा हो, विवेक ही शास्त्र हो तथा विश्व एक कुटुम्ब हो। सभ्य समाज के द्वारा ऋषि दयानन्द नये संसार की तरफ दुनिया को ले जाना चाहिते थे। इन विचारों को सदैव के लिए क्रियान्वित करने के लिए वह आर्य समाज संगठन बना कर गये थे। यदि यह निर्दयी समाज विष द्वारा उनको शहीद न करता तो वह पूरे जीवन में संसार की काया पलट सकते थे। फिर भी वह बहुत कुछ कर गये।

मनुष्य की वर्तमान दुर्दशा का मूल कारण आर्थिक, राजनैतिक या भौतिक ही नहीं वरन् हृदयगत संकीर्णता है। यही कारण है आज, राजनैतिक विषमता, धार्मिक विषमता भौतिक विषमता, पूजा पद्धति विषमता, एवं संसार में परमाणु विषमता आदि से संसार बारूद के ढ़ेर पर बैठा है।

यह वैज्ञानिक युग है विज्ञान क्षेत्र की प्रतिभायें इस क्षेत्र में विशेष रूप से अग्रणी हैं। शासकों को एवं औद्योगिकों को आयुद्ध, भौतिकी, एवं प्रौद्योगिकी को इस स्थान पर प्रोत्साहन मिलकर चरम सीमा पर जा पहुँचा है। आणविक हथियारों की होड से दुनिया में आज इन आयुधों का इतना विशाल भण्डार हो गया है कि अगला विश्व युद्ध अब आणविक हथियारों में ही लड़ा जायेगा। जिसमें सभी कुछ नष्ट हो जायेगा। समस्त संसार रेडियोधर्मिता के कारण मनुष्य के रहने योग्य नही रह जायेगा।

महान वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने कहा था कि चौथा विश्व युद्ध पत्थर के हथियारों से लड़ा जायेगा। यह बात उस समय भले ही सामान्य ढ़ंग से कही गयी हो परन्तु वर्तमान स्थिति पर दृष्टि रखने से यह आभास हो जाता है कि इस कथन के पीछे गम्भीर आशय छिपा हुआ था। तकनीकि ही तकनीकि को खा जायेगी। ऐसी स्थिति में स्पष्ट है कि मनुष्य के पास पत्थरों के अतिरिक्त कुछ रह ही नही जायेगा।

प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध लेकर आज तक संहारक अस्त्रों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। नये प्रकार के अस्त्रों में आश्चर्यजनक सुधार किये गये हैं। तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो उसमें इससे भी अधिक संहारक अस्त्रों का प्रयोग किया जा सकता है। इसका अनुमान लगाना कठिन है। कुछ देश वर्षो से अनुसंधान करने के उद्देश्य से उपग्रह छोड़ रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि अब ऐसे भी उपग्रह विकसित किये जा चुके है, जो इच्छानुसार कही पर भी बम गिरा सकते हैं। इन दिनों रासायनिक युद्धों की चर्चा जोरों पर है। सारे विकसित देशों में अणु परिक्षणों की होड लगी हुई है। कहते तो यह है कि विज्ञान और टेक्नोलॉजी से मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने के साधन जुटाये जा रहे हैं। किन्तु यह भी सत्य है, मनुष्यों के मौत का घातक इन्तजाम भी किए जा रहे हैं।

नये समाज की रूपरेखा मेरे विचारों से कैसी हो :-

- जन्मा जातियों राष्ट्रीय पक्षपात केवल एक धोखा है, क्योंकि ईश्वर ने हम सब को एक ही जाति में उत्पन्न किया है। फिर मनुष्य इस प्रकार के पक्षपातों के शिकार क्यों बनते हैं। ईश्वर ने मनुष्यों को इसलिए नही उत्पन्न किया है कि वह एक दूसरे का विनाश करते रहें। मानव, मानव से प्रेम रखना, देश से प्रेम रखना ही धर्म व विश्वास है। अर्थात् जाति व्यवस्था मानव समाज में **वर्धक**र बारूद है, तथा मानव **जगत** में शीत युद्ध को जन्म दे **रही है।**

नये युग के दो आधार अध्यात्म और विज्ञान :- सृष्टि रचना के साथ-साथ ईश्वर ने मनुष्यों के सर्वागीण सुख शान्ति के लिए वेद ज्ञान वैदिक धर्म, वैदिक व्यवस्था और वैदिक ईश्वरीय धर्म, तथा सृष्टिक्रम विज्ञान के अनुसार दिये है। क्योंकि ईश्वर सत्य है, ईश्वरीय विज्ञान सत्य है। इसलिए विज्ञान को सत्य की संतान कह सकते है यदि गम्भीरता से विचार किया जाये तो विज्ञान का दृष्टिकोण सत्य का रहस्योदघाटन करना ही था किन्तु अन्तः स्वार्थो ने विज्ञान की उन्नति को मानवों का संहार का केन्द्र बना दिया है। इस ईश्वरीय व्यवस्था के उल्लंघन से ही संसार बारूद के ढ़ेर पर बेठा है।

आध्यात्म धर्म सार्वभौम है। वह देश, जाति, और काल के अन्तर में कटता बंटता नही और न उसमें उतार चढ़ाव आते हैं। धर्म को सार्वजनीन, सार्वकालीन, सार्वभौम और शाश्वत सनातन कहा जा सकता है। सम्पूर्ण मानव जगत के लिए ईश्वर ने एक ही धर्म दिया है वह है वैदिक धर्म।

एक ओर संसार के राष्ट्रों में विचार शक्ति, धन शक्ति, कथित विज्ञान की शक्ति की खींचतान चल रही है। वित्तेषणा, लोकेषणा और निजि एषणाओं में संसार के मुल्क बुरी तरह ग्रस्त हो रहे हैं। संसार की सुख शान्ति की ठेकेदारी आज चन्द मुट्ठी भर राजनैतिक नेताओं के हाथ में चली गई है। वे चाहे तो जरा सी बात के लिए लाखों मनुष्यों को मक्खी की तरह मरवा सकते है।

इस अन्धकार युग का प्रारम्भ पाँच हजार वर्ष पूर्व से प्रारम्भ हो गया था। और उसने अब परम्परा का रूप धारण कर लिया है। किन्तु ईश्वर की इच्छा व मनुष्यों का प्रबल सत्य पुरुषार्थ सम्मिलित रूप से आश्चर्यजनक परिवर्तन कर सकता है। उसकी पूर्ति भले ही कठिन हो लेकिन असम्भव नहीं है।

- विनाश लीला टाली जा सकती है :- जब तक मनुष्यों के चिन्तन में भ्रष्टता रहेगी तब तक मानवीय समुदाय में परिवर्तन आने वाला नही है। समाज का वर्तमान ढ़र्रा तभी बदल सकता है जब समाज में अग्रणी बुद्धिजीवी जाग जावें और संगठन के रूप में जागरूकता विकसित हो।

आज धर्म सम्प्रदायों में सभी मार्गदर्शकों को तथा आर्य समाज संगठन को आगे आकर तमाम अन्धविश्वास सामाजिक कुरुतियों, उग्रवाद, अलगाव विचार धारा, वर्गवाद, जातिवाद, कुप्रथायें आदि के निवारण के लिए एक स्वर में आवाज उठानी होगी।

मानव जाति आज जीवन मरण के झूले में झूल रही है हर ऋषि सन्तान मानवीय गरिमा के प्रहरी को अपने मानव समाज के डूबने से बचाने हेतु पवित्रत्तम कार्य का उत्तरादायित्व निर्वाह करना होगा। हमें उन उत्तरादायित्व के निर्वाह के लिए तत्पर होना ही चाहिए जो इस आपत्तिकाल आपत्ति धर्म की तरह हमारे कन्धों पर लद गये हैं समय की युग की पुकार यहीं है इस समस्या पर चिन्तन करना चाहिए।

पृष्ठ..........४ का शेष

तन्मय होकर सुन रही थी। आर्य पथिक पण्डित लेखराम के आक्रमणों से यवन मत मंदिर को ढहता देख मुसलमानों ने उन पर मिर्जापुर अमृतसर लाहौर दिल्ली और बबंई मे मुकदमे चलाए इनमें से एक को छोड़ कर शेष सभी इन्हें न्यायालय द्वारा पेश न होने पर भी खारिज कर दिया गया। फरवरी 1897 के मध्य एक काला गठे हुए बदन का भयानक नाटा युवक पण्डितजी का पता पूछता पूछता उनके निवास स्थान पर पहुँच और निवेदन किया कि वह दो वर्ष पूर्व हिन्दू था अब मुसलमान हो चुका है तथा पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित होना चाहता है। पण्डितजी तो इसके लिए सदा तैयार रहते थे। पण्डितजी ने उसे अपने साथ रख लिया। इस समय पण्डितजी बाहर गए थे 6 मार्च 1997 को पण्डितजी आए। शाम को 6 बजें पण्डितजी अपने घर के बरामदे में चारपाई पर बैठकर महर्षि के जीवन वृत्त सम्बंधी कुछ कार्य करने लगे और घातक उनकी बाई ओर कुर्सी पर बैठ गया। माता जी रसोई में थीं उनकी धर्म पत्नी दुसरे कमरे में पढ़ रही थी। पण्डितजी ने उस घातक युवक जो कम्बल ओढ़े था से कहा भाई देर हो गई है अब तुम आराम करो। परन्तु वह निचल बैठा रहा। पण्डितजी ने दोनों हाथ ऊपर कर अंगडाई ली पण्डितजी उस अवस्था में थे जिसकी घातक राह देख रहा था। अपने अभ्यस्थ हाथों से उसने अपनी कम्बल से निकाली छुरी पण्डितजी के पेट में इस प्रकार घुमा दी कि दस घाव अन्दर आए और अन्तडियाँ बाहर निकल पड़ी आर्य पथिक इस पैशाचिक आक्रमण से किन्चत भी विचलित न हुए यदि उन्होंने शोर किया होता तो लोग दोड़ पड़ते और घातक पकड़ा जाता। पण्डितजी ने बायें हाथ से अन्तडियाँ संभाली और दायें हाथ से घातक से लड़ते भिड़ते सीढ़ी तक जा पहुँचे और उसके हाथ से छुरी ली। इतनी में पत्नी लक्ष्मी देवी बाहर निकल आई और धर्मवीर के ऊपर घातक के होने वाले दूसरे आक्रमण से बचा लिया धर्मवीर की माताजी ने पास पड़े बेलन से उसको मारा उनको भी चोटें आई और घातक हाथ छुडाकर भाग गया। पण्डितजी डेढ़ बजे रात तक सचेत रहे छुरी लगनेके बाद पौने दो घंटे बाद सिविल सर्जन डा0 पैरी साहब आए और दो घंटें तक कटी आँतों को सिलते रहे उन्हें आश्चर्य था कि इतनी देर तक रक्तस्त्राव होने पर भी यह जीवित कैसे हैं पण्डितजी इस बीच गायत्री मंत्र तथा विश्वनिदेव मंत्र का पाठ करते रहे। अपने अनुयायियें को संदेश दे गए कि आर्य समाज से तकरीर और तहरीर का काम बन्द न होने पाए। रात के लगभग दो बजे पण्डितजी ने इस असार संसार से विदा ली।

" धर्म के मार्ग मे अधर्मी से कभी डरना नही। चेत कर चलना कुमार्ग मे कदम धरना नहीं।।
शुद्ध भावों में भयानक मावना भरना नही। बोध वर्धक लेख लिखने में कभी करना नहीं।।
दे मरे हमको मुनासिब राय पण्डित लेखराम। तर गए जगदीश के गुण गाए पण्डित लेखराम।।

कविवर पं० नाथूराम शंकर शर्मा

लाला वेदारीलाल आर्य
58 हाता प्यारे लाल नगर, झांसी

''सत्याचरण से अमृतमय मोक्ष की प्राप्ति मनुष्य जीवन का लक्ष्य

मनमोहन कुमार आर्य,
देहरादून

हमारी जीवात्माओं को मनुष्य जीवन ईश्वर की देन है। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान होने के साथ सर्वज्ञ भी है उससे दान में मिली मानव जीवन रूपी सर्वोत्तम वस्तु का सदुपयोग कर हम उसकी कृपा व सहायता को प्राप्त कर सकते हैं और इसके विपरीत मानव शरीर का सदुपयोग न करने के कारण हमें नियन्ता ईश्वर के दण्ड का भागी होना पड़ सकता है। इस शिक्षा को एक उदाहरण से इस प्रकार समझ सकते हैं कि हमने किसी भूखे व्यक्ति को देखा, उसके पास भूख दूर करने के साधन नहीं है। उसके प्रति हमारे अन्दर दया उत्पन्न हुई और हमने उसे कुछ धन दिया जिससे वह भोजन कर सके। यदि वह भोजन कर अच्छे काम करेगा तो हमें स्वाभावक रूप से प्रसन्नता होगी और यदि वह उस धन से भोजन न कर उस धन से अन्य किसी निष्कृष्ट पदार्थ मदिरापान का सेवन व अभक्ष्य पदार्थ को खाता है तो हमें अपने कृत्य पर पछतावा होगा। हम इसके बाद उसकी सहायता नहीं करेंगे। ईश्वर ने भी जीवात्मा पर दया करके उसे दुर्लभ व सर्वोत्तम मानव शरीर दिया है अतः हमें इसका सदुपयोग कर ईश्वर की अधिक से अधिक सहायता व कृपा को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हम ईश्वर की सुख सम्पत्ति, आत्मोन्नति, अच्छा स्वास्थ्य अच्छे ज्ञानी व महात्मा स्वभाव वाले विद्वानों व मित्रों की संगति आदि भावी कृपाओं से वंचित हो जायेंगे।

वृहदारण्यक उपनिषद के ऋषि ने जीवन निर्माण के स्वर्णिम सूत्र ''असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योमां अमृतं गमय।'' दिए है यह सूत्र उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी व लाभदायक है जो जीवन को इसके वास्तविक लक्ष्य पर ले जाना व पहुंचाना चाहते हैं। इसके लिए इसमें पहली शिक्षा यह दी गई है कि ''असतो मा सद्गमय'' अर्थात् मनुष्य जीवन को जीवात्मा में विद्यमान असत् को हटाकर सत्य मार्गो पर चलाना है ऐसा इसलिए कहा गया है कि असत मार्गी अवनति का दुख की ओर ले जाता है और सत् मार्ग उन्नति व सुख की ओर ले जाता है। संसार में कोई भी मनुष्य या प्राणी दुख नहीं चाहता। सभी कामना करते हैं कि मेरे सारे दुख दूर हो जाये और सभी सुखों की उपलब्धि व प्राप्ति मुझे हो। इसका प्रभाव ही उपनिषद के ऋषि ने ''असतो मा सद्गमय'' कहकर बताया है। ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज का चौथा नियम इसके समान ही बताया है। नियम है कि ''सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'' इसका प्रयोजन भी वही है जो कि 'असतो मा सद्गमय का है इस नियम को विचार कर हमें लगता है कि इसे देश व विश्व का ध्येय वाक्य बना देना चाहिए। शिक्षा व विद्यालयों में हर स्तर पर इसका विवेचन व प्रचार हो और यह हमारे जीवन के लिए एक कसौटी का कार्य करें। हमें प्रतिदिन विचार करना चाहिए कि हमारे जीवन में इस आदर्श का कितना भाग विद्यमान है। महर्षि दयानन्द सहित हमारे सभी ऋषि मुनि व महापुरूष इसी मार्ग पर चले थे। उन्होंने इस वैदिक ज्ञानयुक्त मान्यता का अपने जीवन में पूरा पूरा पालन किया था और इसी से वह सब महान बने थे। आज मनुष्य जाति का जो पतन देखने को मिलता है उसमें कहीं न कहीं इस नियम की उपेक्षा ही दृष्टिगोचर होती दिखाई देती है। इस नियम के पालन न करने से ही प्राचीन काल में यज्ञों में पशुओं की हिंसा होती थी इसी के कारण देश को मूर्तिपूजा, अवतारवाद की कल्पना,फलित ज्योतिष, वेदाध्ययन में प्रमाद, सामाजिक असमानता व विषमता, छोटे बडे की भावना, बाल विवाह, मांसाहार, मदिरापान, धुमपान, असद् व्यवहार व भ्रष्टाचार के रोग लगे। सन् १९६३ से सन् १८८३ तक महर्षि दयानन्द ने धार्मिक व सामाजिक इन अज्ञान अविवेकपूर्ण व मिथ्या अंधविश्वासों का खण्डन किया और सद्ज्ञान का प्रसार करने के लिए ईश्वर प्रदत्त सत्यज्ञान युक्त वेदों की मान्यताओं का देश व भूमण्डल में प्रचार किया। इसे जितने अंशों में देश समाज व विश्व ने अपनाया है उसी अनुपात में आज हम देश व समाज की उन्नति देख रहे हैं। उद्देश्य में अभी हम बहुत पीछे है लगता है कि देश अब रूक गया है। लोग परा व आध्यात्म विद्या की उपेक्षा कर रहे हैं और केवल अपरा विद्या व भौतिक ज्ञान में ही डुबकी लगा रहे हैं। अतः आध्यात्मिक विद्या की उन्नति द्वारा मनुष्य जीवन से असद व्यवहार को हटाकर सद्व्यवहार को सीपित करना ही ईश्वर को प्रसन्न करना व उससे सभी सात्विक सर्वोत्तम सम्पत्तियों को प्राप्त रने का मार्ग विदित होता है।

उपनिषद के ऋषि ने इसके बाद तमसो मा ज्योतिर्गमय कह कर यह भी सुस्पष्ट कर दिया कि जीवन में तम, अज्ञान व मिथ्याचरण नाम मात्र का भी नहीं होना चाहिए। यदि जीवन में तम रूपी अज्ञान व अंधकार होगा तो वह सद्गमय के हमारे ध्येय में बाधक होगा। इसलिए तक के अज्ञान व अंधकार को ज्ञान की ज्योति से दूर करने की शिक्षा उन्होंने दी है यह तम व अज्ञान ऐसा है कि कई बार यह बड़े बड़े ज्ञानियों को भी लग जाता है। यह तम मनुष्यों में राग द्वेष, काम क्रोध व अहंकार आदि मिथ्या बातों के स्वभाव में आ जाने पर प्रविष्ट हो जाता है जिन पर विजय पाना कठिन होता है। आज देखा जाये तो साधारण मनुष्य से लेकर विद्वान तक प्रायः सभी इन तमों से ग्रसित है। इसके लिए वेदादि सद्ग्रंथों का स्वाध्याय व प्रातः सायं ईश्वरोपासना योगाभ्यास, यज्ञाग्निहोत्रादि अनुष्ठान सहित सत्पुरूषों की संगति आवश्यक होती है। संध्या में चिन्तन करते हुए भी यह देखना उचित होता है कि मेरे अंतःकरण में वे मानसिक रोग व विकार है अथवा नहीं। यदि हो तो उन्हें विचार कर दूर करने का दृढ़ संकल्प लेना चाहिए। तम रहित ज्योतिर्गमय जीव ही सदगमय का प्रतीक सात्विक व पारम्परिक जीवन होता है। सत्य का धारण और तम रूपी असत्य का निरन्तर त्याग ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है और इसको करके ही हम मनुष्य कहलाते हैं। हमें मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम, योगेश्वर श्री कृष्ण और वेदभक्त महर्षि दयानन्द में सदाचार का धारण ही उनकी दिव्यता का कारण अनुभव होता है। उन्हीं का अनुकरण हमें भी करके उनके समान बनना है। यही इन महापुरूषों को मानने व उनके गुण कीर्तन करने का प्रयोजन है।

सूत्र की तीसरी व अन्तिम शिक्षा है कि ''मृत्योर्मा अमृतं गमय'' अर्थात् मैं मृत्यु पर विजय प्राप्त करूं और अमृत अर्थात् जन्म मरण से अवकाश प्राप्त कर मोक्ष की प्राप्ति करूं। यह अमृत वा मोक्ष ही मनुष्य जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य व सम्पत्ति है। यही वास्तविक व सर्वोत्तम स्वर्ग, विष्णु लोक व २४ गुणा ७ का निरन्तर ईश्वर की उपलब्धता की स्थिति है जिसमें जीवात्मा ईश्वर में निहित अमृतमय आनन्द का भोग करते हुए ईश्वर के साथ ईश्वर प्रदत्त अनेक शक्तियों से विद्यमान रहता है। इसके विपरीत विद्वानों, धार्मिक गुरूओं व प्रचारकों द्वारा स्वर्ग आदि की जो कल्पना की जाती है वह यथार्थ नहीं है उपनिषद की इसी शिक्षा के समान यजुर्वेद के अध्याय ३० का तीसरा मंत्र 'ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रन्तन्न आसुव'' भी है इसका हम प्रतिदिन अर्थ सहित पाठ करते ही है जिसमें कहा गया है कि हे सकल जगत के उत्तपत्तिकर्ता समय ऐश्वर्ययुक्त शुद्धस्वरूप सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारण गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है वह सब हमको प्राप्त कीजिए। इसमें सभी प्रकार के सात्विक सांसारिक सुखों के साधनों व सम्पत्तियों सहित अमृतमय मोक्ष सुख भी सम्मिलित हैं

हम आशा करते हैं कि पाठक इस लेख पर विचार कर उपनिषद वाक्य में वर्णित वैदिक शिक्षा को अपने जीवन में अपनायेंगे और महर्षि दयानन्द द्वारा जनसाधारण की भाषा में लिखित सत्यार्थ प्रकाश आदि अन्यान्य ग्रंथों का अध्ययन व स्वाध्याय कर अपने जीवन के ध्येय सर्वोत्तम सुख मोक्ष की ओर अग्रसर होंगे।

१६६, चुक्खूवाला-२
देहरादून- २४८००१
मोबाइल-९४१२६८५१२१

आर्य समाज महोलिया का 16वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज महोलिया उन्नाव का 16 वाँ वार्षिकोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ 18 से 20 मार्च 2016 को मनाया जाएगा जिसमें औरैया से स्वामी प्रभुवेश, स्वामी महावीर सीतापुर से भजनोपदेशक में पं0 प्रमोद कुमार काशगंज प्रधार रहें है कार्यक्रम प्रातः 8 बजें से 10 बजें तक दोपहर 2 बजे से 5 बजें तक रात्रि 8 बजें से 10 तक चलेंगा

आर्य समाज बगही का वार्षिकोत्सव 19 से मनाया जायेगा धूमधाम के साथ

आर्य समाज बगही चुनार मीरजापुर का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी बड़े ही धूमधाम के साथ आगमी 19 से 21 मार्च 2016 को स्थानीय आर्य समाज के प्रागण में मनाया जायेगा इस अवसर पर आर्य समाज की उच्च कोटि के विद्वान श्री अशर्फीलाल शास्त्री सिराथू, पं0 विमल किशोर आर्य वैदिक प्रावक्ता लखनऊ के वेद प्रवचन एवं पाणनीय कन्या विद्यालय वाराणसी द्वारा यज्ञ एवं वेद पाठ इसके अतिरिक्त भजनोपदेशको में पं0 जगुल किशोर आर्य हरदौई, गीता पाण्डेय नानपारा बहराइच के सारगर्भित भजन होगे उपरोक्त कार्यक्रम की जानकारी श्री बच्चेलाल सिंह ने देते हुए बताया कि उत्सव तीन सत्रों में चलेगा जिसमें विभिन्न विषयों पर वैदिक विद्वान अपना प्रकाश डालेगे।

आर्य समाज कानपुर (मेस्टन रोड) का 136 वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कानपुर (मेस्टन रोड़,) का 136 वाँ वार्षिकोत्सव आर्य समाज मदिंर श्रृद्धानन्द पार्क मे दिनांक 05 मार्च से 07 मार्च 2016 तक बड़ी धूमधाम से बनाया जायेगा

समारोह में विद्वावगण में आचार्य शिव कुमार शस्त्री (सहारनपुर), पं0 दीनानाथ शस्त्री (अमेठी), आचार्य सतीश सत्यम् (दिल्ली), डं0 जलेश्वर मुनिजी(कानपुर) आदि है।

कार्यक्रम में प्रातः 6.30 से मध्यान्ह 12.30 तक यज्ञ भजन व प्रवचन सायः 4.00 बजे से रात्रि 9.30 तक यज्ञ भजन व प्रवचन आदि होगे दिनांक 05 मार्च 2016 सायं 4.00 बजें विशाल शोभा यात्रा(नगर कर्तिन) निकाली जायेगी दिनांक 07 मार्च 2016 को माध्यान प्रीतिभोज का आयोजन किया गया है।

सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अधिक–अधिक से संख्या में पहुँचकर उत्सव को सफल बनार्वे।

मंत्री –जय सिंह (एडवोकेट)

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री जी की सूचना

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ के मंत्री डा. विजय पाल सिंह आर्य द्वारा अवगत कराया गया है कि कुछ असामाजिक तत्व कथित आर्यवीर दल के शिविर भिन्न भिन्न स्थानों पर आयोजन बिना आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ की अनुमति के कर रहे है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ की अनुमति के बिना आर्य वीर दल का कोई भी शिविर आयोजित नहीं किया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ के प्रधान माननीय श्री देवेन्द्रपाल वर्मा है।

डा. विजय पाल सिंह आर्य, मंत्री
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, अलीगढ़

आर्य समाज उमरी का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज उमरी कानपुर का वार्षिकोत्सव होली के अवसर पर २४ व २५ मार्च २०१६ को स्थानीय एक विद्यालय के परिसर में मनाया जायेगा जिसमें श्री रघुराज शास्त्री कानपुर, पं. विमल किशोर आर्य वैदिक प्रवक्ता लखनऊ एवं श्री रघुनाथ जी भजनोपदेशक मथुरा, श्री सेवकराम जी हमीरपुर आ रहे हैं। आर्य समाज उमरी के युवा मंत्री शिवमित्र आर्य ने बताया कि कार्यक्रम तीन सत्र में चलेगा जिसमें प्रातः यज्ञ, हवन, दोपहर २ से ५ बजे तक वेद प्रवचन तथा सायंकाल रात्रि ७ से ११ बजे तक विभिन्न सम्मेलनों पर विद्वानों के व्याख्यान होंगे।

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र ०८ मार्च, २०१६ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४-२०१३-१५

एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

आर्य समाज मंदिर आजमपुर मूलरूप जिला बागपत का उद्घाटन के कतिपय चित्र

शामली में आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन के कुछ चित्र

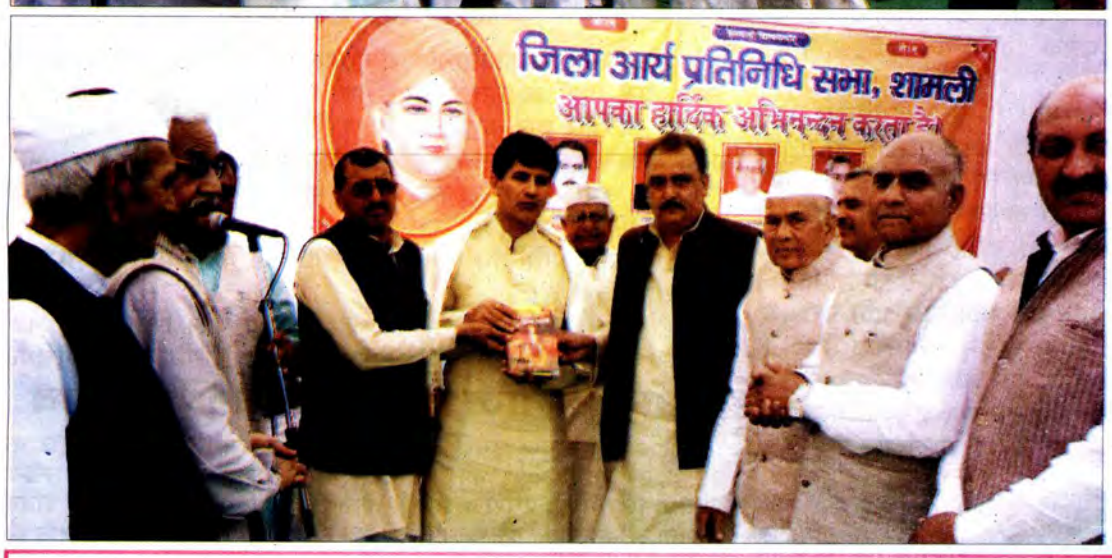

!! ओ३म् !!

(गीत वन्दे मातरम्)

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।
गायें सब छात्रम्।गायें सब छात्रम्।
सुजलां सुफलां मल्यज शीतलाम्
शास्य श्यामलाम्। हिन्दू मुस्लिम
सिक्ख इसाई इसको जपो तमाम।
भ्राता हों भ्रातरम्।।वन्दे मातरम्।।?
शुभ्र ज्योतस्मान पुल्कित यामिनीम,
पाकिस्तान हिन्द का यह दिल फटा दे सीम।
सायं व प्रातरम्।। वन्दे मातरम्।।
द्रम्दल कुश्मित सुरमित सोहित
प्रफुल्लित सोभिनीम्।
श्री राम कृष्ण जी जन्मे, हनुमत अर्जुन भीम
पावन सुपात्रम्। वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्।।
सुरवदां वरदां सुहासनीम् सुमधुर भाषणीम्,
कड़क देव आर्य व्रत मेरा सदा रहे स्वाधीन
रवि वो रात्रम्।। वन्दे मातरम्।।

(कड़कदेवार्य योगा चार्य कृतः)
गिनौरा (बुलन्दशहर)
मो– 9411861765

मनोवृति रूपी वृक्ष में लगाते है चार फल

विमल किशोर आर्य
"वैदिक प्रवक्ता"

मनोवृति रूपी वृक्ष में चार फल लगते हैं और उन्हीं के द्वारा हमारी जीवन यात्रा भी होती रहती है। वे चार फल हैं आहार, निद्रा भय मैथुन यहां पर हम आहार पर विचार करेगे। आहार में मांसहार नही करना चाहिए", वेद कहता है स्वादोक भक्षययासः सुमेधा हम स्वदिष्ट भोजन करें जो मनुष्य मांस का आहार करते हैं उनकी मनोवृति भी मांशाहारी पशु ही जैसी हो जाया करती है। इतिहास साक्षी है एक–एक मनुष्य ने हजार और लाखों निरअपराध मनुष्य का वध ही नही किया उन्हें जिन्दा तक जलवा दिया हैं

मनोवृति अनन्त हैं यह मनोवृतियां जब हिंसा, विषयभोग अपवित्रता, झूठ आदि दोषों से मिलकर होती है तो वह मनुष्य को नीचे गिराती हैं। यह मनोवृतियाँ उतनी प्रकार की है जितनी यौनीयाँ पशु पक्षी, कीटपतंगा आदि की होती है। पशु आदि को स्वाभविक वृत्तियां और मनुष्य को इस प्रकार की मनोवृतियों में कुछ अन्तर नही रहता।

जब मनुष्य में इस प्रकार मनोवृत्तियी उदय होती है तो वह मनुष्य सूक्ष्म शरीर से उन्ही पशुयोनियों में होता हैं यद्यपि स्थूल शरीर मनुष्य जैसा ही रहता है।

हिसा और माँस भक्षण आदि क्रूरता का मनुष्य स्वभाव के विपरीत धर्म के पर हिंसको के संसर्ग से हिंसक प्रवृत्ति बढ़ती ही जाती है और स्वभाव हिंसक हो जाता है। क्योंकि कर्मे ही संस्कार और संस्कारों से कर्म बनते है।

माँसहारीयों को समझ लेना चाहिए कि मनुष्य रूप में तो वे हिंसक पशु है ही पर मरने पर हिंसक मनोवृति उन्हे हिंसक मनुष्य अथंवा हिंसक पशु के गर्भ में ले जाती है और इसी प्रकार से अनेको जन्म व्यतीत हो जाते है इसलिए अवश्यक है हम मनुष्य ऊपर उठकर देव बने तथा पुण्य कार्मो का संग्रह करे। माँसाहारी मनुष्य का रक्त ही नही मन भी मलीन हो जाता है मन मलीन होने से मनोवृति भी बिगड़ जाया करती है कोई मनुष्य कितना ही जप, तप,स्नान, तीर्थ या नित्य हवन व संन्ध्या किया करता हो पर मनोवृत्ति यदि ठीक नहीं तो वह नीच ही बना रहेगा किसी कर्म के करने में केवल शरीर व इन्द्रियां कारण नही हुआ करती वास्तविक कारण इनमें मनोवृति ही होती है इसीलिए मनोवृत्ति ही को वास्तविक कर्म कहा गया है।

विराम खण्ड गोमती नगर लखनऊ
07499698294

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।